बुढ़िया के आशीर्वाद

प्रश्न उत्तर -

प्रश्न-1 रमती कौन थी और उसकी घरेलू हालत क्या थी?

उत्तर- रमती एक बुढ़िया थी जो मेघा नामक गांव में रहती थी। जब वह केवल तीस वर्ष की ही थी उसके पति की मृत्यु हो गई थी। उसके दो बेटों की भी असमय मृत्यु हो गई। एक लड़की थी जिसका ब्याह दूर किसी गांव में हुआ था। ज़मीन से जो आय होती थी उसी से रमती गुज़ारा कर लेती थी।

प्रश्न -2 कौन लड़का रमती को हर रोज़ देखने आता था?

उत्तर-रमती के पड़ोस में रहने वाला सुधीर नाम का एक लड़का उसको हर रोज़ देखने आता था।

प्रश्न-3 रमती बेहोश कैसे हो गई थी?

उत्तर-1 एक दिन रमती को बुखार चढ़ गया। वह अकेली खाट पर पड़ी रही। बुखार इतना तेज़ था कि उसकी उठने की हिम्मत ही न थी। उसका सिर चकरा रहा था थोड़ी देर बाद उसे उल्टी होने लगी और वह बेहोश हो गई।

प्रश्न-4 सुधीर ने रमती की किस प्रकार सेवा की?

उत्तर-रमती के बेहोश होने पर सुधीर वैद्य जी को बुलाकर लाया और उसकी उल्टियां साफ की। समय-समय पर रमती को दवा खिलाता रहा और उसके खाने पीने का ध्यान रखा इस तरह सुधीर ने रमती की सेवा की।

प्रश्न-5 रमती सुधीर को क्या आशीर्वाद दिया करती थी?

उत्तर-रमती सुधीर को यह आशीर्वाद दिया करती थी कि भगवान उसे विद्वान ,धनवान, यशस्वी, स्वस्थ और चिरायु बनाएं।

प्रश्न-6 रमती के आशीर्वादों ने सुधीर के जीवन को कैसे बदला?

उत्तर रमती के आशीर्वादों के कारण ही बड़ा होकर सुधीर पढ़ लिखकर जिलाधीश के पद पर पहुंच गया।

प्रश्न- 7 किसने कहा, कब कहा और क्यों कहा- "यह अभिनंदन मेरा नहीं, बल्कि रमती दादी का है।"

उत्तर-यह वाक्य सुधीर ने कहा, जब वह जिलाधीश बन गया और जिले के लोगों ने उसके काम से खुश होकर उसका अभिनंदन किया क्योंकि उसका मानना था कि उसने अपने जीवन में जो कुछ भी उन्नति की है, वह रमती दादी के आशीर्वाद का ही फल है।